एलिय्याह ने साढ़े तीन वर्षों तक आकाश क्यों बंद कर दिया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

(1 राजा 17:1)

मुख्य प्रश्न

भविष्यद्वक्ता एलिय्याह ने इस्राएल में साढ़े तीन वर्षों तक न वर्षा होने की घोषणा क्यों की?

बाइबिल पृष्ठभूमि

1 राजा 17:1
“तब तिश्बे का निवासी एलिय्याह, जो गिलआद के तिश्बे से था,
अहाब से कहने लगा, ‘इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके सामने मैं खड़ा रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ—मेरे वचन के बिना इन वर्षों में न ओस पड़ेगी और न वर्षा होगी।’”

यह घोषणा किसी व्यक्तिगत क्रोध या मनमानी का परिणाम नहीं थी, बल्कि इस्राएल राष्ट्र पर परमेश्वर के न्याय का स्पष्ट कार्य था, क्योंकि वे लगातार मूर्तिपूजा और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में बने हुए थे।

व्याख्या

एलिय्याह ने साढ़े तीन वर्षों तक आकाश क्यों बंद कर दिया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

1. राष्ट्रीय पतन और मूर्तिपूजा

राजा अहाब के शासनकाल में इस्राएल गहरे आत्मिक पतन में चला गया। अहाब ने सीदोन की राजकुमारी इज़ेबेल से विवाह किया, जो बाल की कट्टर उपासक थी। बाल को कनानी उर्वरता का देवता माना जाता था, जिसे वर्षा और खेती की समृद्धि से जोड़ा जाता था।

1 राजा 16:30–33
“ओम्री के पुत्र अहाब ने यहोवा की दृष्टि में अपने से पहले
के सब लोगों से अधिक बुराई की… और उसने सामरिया में जो बाल
का भवन बनाया था, उसमें बाल के लिये वेदी बनाई।”

यह पहला आज्ञा—“तू मुझे छोड़ किसी और को अपना परमेश्वर न मानना” (निर्गमन 20:3)—का सीधा उल्लंघन था। बाल की उपासना केवल आत्मिक अपराध नहीं थी, बल्कि एक राष्ट्रीय और सांस्कृतिक विश्वासघात भी था, जिसने पूरे राष्ट्र को परमेश्वर के न्याय के अधीन कर दिया।

2. वाचा के श्रापों की पूर्ति

एलिय्याह द्वारा सूखे की घोषणा अचानक या बिना आधार के नहीं थी।

एलिय्याह ने साढ़े तीन वर्षों तक आकाश क्यों बंद कर दिया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यह उस वाचा के अनुसार थी जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल को दी थी। परमेश्वर पहले ही चेतावनी दे चुका था कि यदि वे अन्य देवताओं की ओर मुड़ेंगे, तो आकाश बंद कर दिया जाएगा।

व्यवस्थाविवरण 11:16–17
“सावधान रहो कि तुम्हारा मन धोखा न खाए और तुम फिरकर अन्य देवताओं की सेवा और उपासना न करने लगो; नहीं तो यहोवा का
क्रोध तुम पर भड़केगा, और वह आकाश को बंद कर देगा, और वर्षा न होगी।”

यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर की वाचा संबंध पर आधारित है, पर उसमें उत्तरदायित्व भी जुड़ा है—आज्ञाकारिता आशीष लाती है, और अवज्ञा ताड़ना (देखें: लैव्यव्यवस्था 26; व्यवस्थाविवरण 28)।

3. भविष्यद्वक्ता की भूमिका और मध्यस्थता

एलिय्याह केवल भविष्य बताने वाला नहीं था; वह वाचा का रक्षक था। वह परमेश्वर की धार्मिकता और न्याय का प्रतिनिधि बनकर खड़ा हुआ। अहाब और इज़ेबेल का निर्भीकता से सामना करना, भविष्यद्वक्ता की मध्यस्थ और सुधारक भूमिका को दर्शाता है।

एलिय्याह ने साढ़े तीन वर्षों तक आकाश क्यों बंद कर दिया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

याकूब 5:17–18
“एलिय्याह हम ही के समान स्वभाव का मनुष्य था; उसने बड़ी प्रार्थना की कि वर्षा न हो, और साढ़े तीन वर्ष तक पृथ्वी पर वर्षा न हुई। फिर उसने प्रार्थना की, और आकाश से वर्षा हुई।”

इस प्रकार सूखा एक ओर न्याय का कार्य था, तो दूसरी ओर पश्चाताप का प्रेमपूर्ण बुलावा भी।

4. पश्चाताप, पुनःस्थापन और परमेश्वर की दया

कर्मेल पर्वत पर हुई अद्भुत घटना के बाद—जब परमेश्वर ने स्वर्ग से आग भेजकर एलिय्याह की बलि को भस्म कर दिया—लोगों के हृदय यहोवा की ओर लौट आए।

1 राजा 18:39
“यह देखकर सब लोग मुँह के बल गिर पड़े, और कहने लगे, ‘यहोवा ही परमेश्वर है! यहोवा ही परमेश्वर है!’”

जब लोगों ने मन फिराया, तब एलिय्याह ने प्रार्थना की, और वर्षा

एलिय्याह ने साढ़े तीन वर्षों तक आकाश क्यों बंद कर दिया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

लौट आई—यह परमेश्वर की दया और पुनःस्थापन की तत्परता का प्रमाण था।

1 राजा 18:41
“तब एलिय्याह ने अहाब से कहा, ‘जा, खा-पी; क्योंकि भारी वर्षा
की आहट सुनाई देती है।’”

आज के लिए आत्मिक संदेश

जैसे उस समय इस्राएल को समझौते का सामना करना पड़ा, वैसे ही आज के विश्वासी भी आत्मिक समझौते के खतरे में हैं—ऊपर से परमेश्वर की आराधना करना, पर भीतर से संसार के ‘बालों’ (धन, प्रतिष्ठा, शक्ति, आत्मकेंद्रित जीवन) के पीछे चलना।

1 राजा 18:21
“एलिय्याह ने सब लोगों के पास आकर कहा, ‘तुम कब तक दो विचारों के बीच लँगड़ाते रहोगे? यदि यहोवा परमेश्वर है, तो उसी के पीछे चलो; और यदि बाल है, तो उसके पीछे चलो।’”

एलिय्याह ने साढ़े तीन वर्षों तक आकाश क्यों बंद कर दिया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

संदेश आज भी उतना ही स्पष्ट है। परमेश्वर आधे-अधूरे नहीं, बल्कि पूरी तरह समर्पित हृदय चाहता है। उसकी ताड़ना दंड नहीं, बल्कि प्रेम से भरा हुआ लौट आने का बुलावा है।

इब्रानियों 12:6
“क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना करता है।”

निष्कर्ष

एलिय्याह द्वारा आकाश का बंद होना वाचा-आधारित एक दिव्य चेतावनी था—जो न्याय भी था और अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण भी। यह हमें स्मरण दिलाता है कि:

परमेश्वर धीरजवन्त है, परन्तु पवित्र भी है।
पाप के परिणाम होते हैं—व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों।
सच्चा पश्चाताप पुनःस्थापन लाता है।
जब हृदय परमेश्वर की ओर लौटते हैं, तब वह आज भी “वर्षा” भेजता है।

आइए, हम निर्णय करने में देर न करें कि हम किसकी सेवा करेंगे। जैसे तब, वैसे ही आज भी—यदि हम लौटने को तैयार हों, तो परमेश्वर आकाश खोलने को तैयार है।

एलिय्याह ने साढ़े तीन वर्षों तक आकाश क्यों बंद कर दिया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

प्रभु आ रहे हैं।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp